'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 9 19 जुलाई, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

आक्रोशित समाज और हठधर्मी सरकार

24 जून की रात्रि को समाचार आया कि कुख्यात गेंगस्टर आनंदपाल चुरू जिले के मालासर गांव में पुलिस एनकाउंटर में मारा गया। घटना के दूसरे दिन उसे पसंद करने वाले कुछ युवाओं ने उसके गांव सांवराद में जाकर आंदोलन किया, रास्ता रोका एवं जसवंतगढ़ थानाधिकारी के साथ मारपीट भी की। आम समाज ने इसे सामान्य प्रतिक्रिया माना एवं किसी प्रकार की विशेष संजीदगी नहीं दिखाई। घटना के तुरन्त बाद समाज में उसके प्रति कोई विशेष सद्भावना नहीं देखी गई एवं उसके लिए आंदोलन कर रहे लोगों को अपरिपक्व युवा जोश की प्रतिक्रिया मात्र ही माना गया। लेकिन घटना के दूसरे दिन जिस प्रकार से सरकार में आपस में बधाइयों का दौर प्रारम्भ हुआ, सरकार द्वारा उसे जिंदा न पकड़ पाने का कोई अफसोस किसी भी सरकारी अधिकारी एवं नेता का नहीं दिखाई दिया, समाज विशेष में जिस प्रकार खुशियां मनाई गई उसके कारण समाज के प्रतिक्रियावादी युवाओं के प्रति आम समाज का समर्थन बढ़ने लगा। जबकि वही समाज उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद इस प्रकार की प्रतिक्रिया दे रहा था कि ऊत और भूत की उम्र कम ही होती है।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

गुजरात का राजपूत आंदोलित

गुजरात के सुरेन्द्र नगर जिले के धारन्गाध्रा के पूर्व नगरपालिका प्रमुख इन्द्रसिंह झाला की विगत दिनों भरवाड़ समाज के कुछ लोगों ने हत्या कर दी। इससे पूर्व इन्द्रसिंह ने उस क्षेत्र के खूंखार बदमाश पोपट भरवाड़ को मार दिया था। पोपट उस क्षेत्र का खूंखार बदमाश था जिसने उस क्षेत्र के सभी वर्गों में आतंक मचा रखा था। उसके उस आतंक के कारण इन्दुभा झाला से हुए झगड़े में वह मारा गया। इस हेतु इन्दुभा ने आत्मसमर्पण कर दिया था एवं वे जेल में थे। विगत दिनों जेल से पेरोल पर छूट कर वे परिवार के साथ यात्रा पर गए थे। यात्रा से लौटते समय धारन्गाध्रा के निकट 15 लोगों ने घेर कर उनकी हत्या कर दी। पूरे गुजरात का राजपूत समाज इस हत्या के विरुद्ध आंदोलित हुआ एवं आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की। कथित राजनीतिक संरक्षण के कारण हत्यारों में से मात्र एक व्यक्ति ही अभी गिरफ्तार हुआ है। इसके विरोध में राजपूत समाज के आह्वान पर पूरा सुरेन्द्रनगर जिला अभूतपूर्व रूप से बंद रहा। पूरे जिले में एक भी दुकान से नहीं खुली। 13 जुलाई को उनके बेसणा (मृतक के पीछे रखी जाने वाली बैठक) में पूरे गुजरात से हजारों राजपूत एकत्र हुए। मोरबी एवं हलवद के बीच इस बैठक में आ रहे समाज बंधुओं पर भरवाड़ लोगों ने हमला किया। समाज बंधुओं के साथ हुए संघर्ष में एक भरवाड़ मारा गया। इसके बाद पूरे क्षेत्र में तनाव का माहौल है। अपराधियों को मिल रहे संरक्षण से पूरा गुजरात उद्वेलित है।

हर्षवर्धनसिंह झाला ने बढ़ाई सेना की ताकत

गुजरात के अहमदाबाद शहर में रहने वाले हर्षवर्धन सिंह झाला ने मात्र 14 वर्ष की उम्र में ऐसा ड्रोन बनाया है जो जमीन से मात्र दो फीट की ऊंचाई पर उड़कर रेडियो तरंगो से बारूदी सुरंगों का पता लगाकर उन्हें नष्ट करता है। हर्षवर्धन सिंह के इस आविष्कार को भारतीय सेना ने स्वीकृत कर दिया है। गुजरात सरकार ने इस ड्रोन के कॉमर्शियल उत्पादन के लिए इस किशोर से 5 करोड़ का एम.ओ.यू. साईन किया है। समाज को अपनी इस किशोर प्रतिभा पर गर्व है।

राम से पहले नहीं था राम का मंदिर : स्वामीजी

भगवान राम से पहले उनका मंदिर नहीं था, भगवान कृष्ण से पहले उनका भी मंदिर नहीं था, नानक से पहले ननकाना साहिब नहीं था। मुहम्मद साहब से पहले मक्का भी नहीं था। ये सब तो उनकी स्मृति को संजोकर रखने के साधन मात्र हैं इसलिए इनका महत्त्व नहीं बल्कि महत्त्व इस बात का है कि भगवान राम ने क्या पाया और किस मार्ग पर चलकर पाया, भगवान कृष्ण किस मार्ग पर चलकर भगवान बने एवं नानक व मुहम्मद साहब क्यों हमारे लिए पूज्य हैं, उनकी किस उपलब्धि के कारण हमारा यह पूज्य भाव पनपा, इस बात की शोध आवश्यक है। इस शोध का नाम ही धर्म है और दुर्भाग्य से आज अपने आपको धर्म के जानकार कहने वाले लोग यह बताने की अपेक्षा मंदिर-मंदिर रटा रहे हैं या मस्जिद-मस्जिद रटा रहे हैं। आज जो लोग आपस में लड़ रहे हैं उनका कोई दोष नहीं है क्यों कि विगत 2000 वर्षों में उनको धर्म के नाम पर अनेक भ्रांतियां पकड़ा दी गई हैं। गीता इन सब भ्रांतियों का नाश करती है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर परमहंस आश्रम शक्तेशगढ़ वाराणसी में आयोजित महोत्सव में शामिल होने पहुंचे माननीय संघ प्रमुख श्री को स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने यह संदेश दिया। उन्होंने माननीय संघ प्रमुख श्री को भ्रांतियों के निवारण हेतु गीता का संदेश घर-घर में पहुंचाने का निर्देश

देते हुए कहा कि संसार को सही मार्ग पर लाना ही क्षत्रियत्व है। महोत्सव में आए महात्माओं को संदेश देते हुए स्वामी जी ने कहा कि राजा ऋषभदेव जी के 100 पुत्र हुए। उनमें से 81 तपस्या कर ब्रह्मर्षी हो गए इसलिए ऋषित्व जन्म से नहीं मिलता बल्कि तपस्या कर हासिल किया जाता है। उन्होंने कहा कि समस्त सृष्टि महाराज मनु से जायमान होने के कारण राजकुलोत्पन्न है। खान-पान, रहन-सहन एवं सामाजिक व्यवस्थाएं देश काल एवं परिस्थिति जन्य है। धर्म वह है जो सारे अभावों की पूर्ति करे, सहज स्वरूप प्रदान करे एवं अलगाव को समाप्त करे। किसी की सभी कामनाएं चार ही प्रकार की होती हैं ऐसी कामना करने वाले को गीता में आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु एवं ज्ञानी कहा है।

➡ (शेष पृष्ठ 3 पर)

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है गुजरात के कच्छ क्षेत्र के जिले भुज में स्थित पांध्रो गांव की कहानी।

गुजरात के लिग्नाईट प्रोजेक्ट का गांव पांध्रो

गांव स्थित लिग्नाईट कोयले की खान

गुजरात राज्य की पश्चिमी समुद्र सीमा पर स्थित क्षेत्र कच्छ के जिले भुज में स्थित गांव पांध्रो को यहां स्थित लिग्नाईट कोयले की खान ने प्रदेश भर में पहचान दिलाई है। 1976 में खोजी गई यह खान लिग्नाईट कोयले की प्रदेश की सबसे बड़ी खान है एवं इसी के कारण 1982 में यहां गुजरात इलेक्ट्रिक बोर्ड का पावर स्टेशन व बिजली उत्पादन कारखाना बना जिसने क्षेत्र के लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध करवाए। पांध्रो शब्द पांच ध्रो से बना है। ध्रो का अर्थ कुए होता है। इस गांव में स्थित पांच कुओं के आधार पर ही इसका नाम पांध्रो रखा गया। यह गांव जिला मुख्यालय भुज से 130 किलोमीटर एवं तहसील मुख्यालय लखपत से 25 किमी दूर स्थित है। गांव से अरब सागर का तट मात्र 20 किमी दूरी पर स्थित है। गांव की स्थापना लगभग 100 वर्ष पूर्व मूसलमानों की मैमण एवं सैयद जातियों ने की थी। कालांतर में यह गांव निकट रह रहे जाड़ेजा राजपूतों की जागीर बना। आजादी के बाद 1962 के आसपास निकट के गांवों बैयावो, विराणी, गडूली, कपूराशी आदि से राजपूत यहां आकर बसे। वर्तमान में गांव में 50 परिवार जाड़ेजा राजपूतों के, 200 परिवार सोढ़ो के, 25 परिवार चौहानों के, 3 परिवार झालों के, 3 भाटियों के व 3 राठौड़ों के हैं। राजपूतों के अलावा 300 परिवार मूसलमानों के, 80 पटेलों के, 25 कोळीयो के, 50 पाराधी के, 5 सोनी, 100 हरिजन, 5 दर्जी, 3 ब्राह्मण, 20 सिख, 6 नाई, 15 गोस्वामी, 10 लोहाणों के परिवार बसते हैं। इसके अतिरिक्त पांध्रों पंचायत के तीन किमी के दायरे में 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय शरणार्थियों ने दो गांव बसाए जिनमें सोनलनगर में 200 परिवार चारणों के व 30 राजपूतों के तथा नवानगर में ब्राह्मणों के 200 परिवारों के साथ-साथ चारण, कोली एवं राजपूतों के भी परिवार हैं। 1982 में जीबीई एवं जीएमडीसी ने अपने कर्मचारियों के लिए कॉलोनी बसाई जिसमें 600 क्वार्टर बने हुए हैं। इसके अलावा व्यापारियों के लिए एकतानगर बसा हुआ है जिसमें लगभग 100 परिवार व्यापारियों के बसते हैं। गांव के अधिकांश लोग जीएमडीसी एवं इससे संबद्ध निजी कंपनियों में नौकरी करते हैं। शेष लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन एवं कृषि है। यहां मुख्यतः कपास, मूंगफली, अरण्डी, गेहूं के साथ-साथ खरीफ की फसल की खेती होती है। गांव के कुछ युवक व्यापार एवं कंपनियों के कामों के कांट्रेक्ट लेकर ठेकेदारी भी करते हैं। गांव में माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक तो अच्छी जागृति है लेकिन माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद अधिकांश लोग आईटीआई या अन्य डिप्लोमा कोर्स कर रोजगार हासिल करते हैं। इसके अलावा उच्च शिक्षा के प्रति रुझान कम है। गांव में लगभग सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। उच्च माध्यमिक विद्यालय, घर-घर नल कनेक्शन, स्ट्रीट रोड व लाइट, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पंचायत भवन आदि सरकार द्वारा उपलब्ध हैं। जीईबी की सरकारी कॉलोनी में बड़ा हॉस्पीटल है एवं इनके अलावा भी 3-4 प्राइवेट क्लिनिक हैं। गांव से गुजरात के मुख्य शहरों में अहमदाबाद, राजकोट, बड़ौदा आदि के लिए निजी एवं सरकारी बस सेवा उपलब्ध है। पानी का मुख्य स्रोत निकट स्थित गोधातड़ बांध एवं नर्मदा नहर की पाइप लाइन है। गांव में पुलिस चौकी भी स्थित है। गांव से 20 किमी दूर अरब सागर के तट पर पौराणिक तीर्थस्थल नारायण सरोवर व कोटेश्वर मंदिर स्थित है एवं 40 किमी दूर प्रसिद्ध शक्ति केन्द्र आशापुरा माता मंदिर स्थित है। गांव का पूरी तहसील में राजनीतिक वर्चस्व है। गांव में कुल 10 बार में से 8 बार राजपूत सरपंच रहे हैं। जिनमें भीमाजी जड़ेजा दो बार, विक्रमसिंह सोढ़ा दो बार, शेराजी, बुधुभा, माधू भा आदि एक-एक बार सरपंच रहे हैं। भीमाजी जड़ेजा एवं कर्णसिंह सोढ़ा पंचायत समिति सदस्य रहे हैं वहीं बटुकसिंह जड़ेजा व देशूभा जड़ेजा कॉपरेटिव चेयरमैन भी रहे हैं। विक्रमसिंह सोढ़ा पंचायत समिति में विपक्ष के नेता भी रहे हैं। वर्तमान में सरपंच सीट आरक्षित है लेकिन उप सरपंच युवा कुलदीपसिंह है। संघ की यहां अनियमित रूप से शाखा लगती रही है। अनेक युवाओं ने शिविर किए हैं। अपनी सीमा सद्भावना यात्रा के दौरान 2009 में माननीय संघ प्रमुखश्री भी इस गांव में पधारे थे। गुजरात के वरिष्ठ स्वयंसेवक अनेक बार गांव में आए हैं। युवा स्वयंसेवक तनसिंह बिजावा विगत 13 वर्षों से यहां व्यवसायरत है। समय-समय पर यहां सांघिक कार्यक्रम होते रहते हैं, शिविर भी लगे हैं। कच्छ प्रांत में यह गांव संघ गतिविधियों का केन्द्र है।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

नवीन सरकारी स्कूल जोधपुर

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

रियासत कालीन रजवाड़ों ने आजादी के बाद राजस्थान के निर्माण में अद्भुद् योगदान दिया। इन्होंने अपनी रियासतों में निर्मित नायाब भवन सरकार को भेंट कर दिए जो जन हितार्थ काम आ रहे हैं। यह इमारतें आज के समय में बहुमूल्यवान हैं। जोधपुर रियासत ने जनकल्याण के लिए बहुत उपयोगी भवन जनता को दे दिए। इनमें बहुत सी इमारतें शिक्षा क्षेत्र में जनता के काम आ रही हैं। इस तरह की एक सुन्दर इमारत है नवीन उच्च माध्यकि विद्यालय (न्यू गवर्नमेंट स्कूल)। यह इमारत नई सड़क के विपरीत मोहनपुरा रेल्वे पुलिया से उतरते रातानाड़ा की ओर दांई तरफ बनी है। यह भवन लाल बलुआ पत्थरों को कलात्मक ढंग से तरास कर बनाया गया है। इस सुन्दर भवन का स्थापत्य अपने आप में अनूठा है। इमारत का हर भाग छह अथवा आठ कोणों में बंटा लगता है। यह बहुमंजिला इमारत सुन्दर मेहराबों, सुदृढ़ झरोखो, बारीक कटाई की जालियों आदि से सुसज्जित एक भव्य राजमहल लगती है। इसकी भव्यता व सुन्दरता किसी भी राहगीर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इस भवन के मध्य लम्बा चौड़ा दुमंजिला महफिल खाना बना हुआ था जो अपने आराइश (कांच) कला के लिए प्रसिद्ध है। यह भवन मूलतः जोधपुर राजपरिवार के खास मेहमानों की आवभगत के लिए निर्मित किया गया था। परन्तु बाद में यह युवराज सरदारसिंह जी के आमोद-प्रमोद के लिए काम आने लगा। यह उनके यौवन की अठखेलियों का गवाह है।

यह सुन्दर भवन मारवाड़ के पुराने लोगों के मध्य 'उगम जी रो बंगलो' के नाम से विख्यात है। उगम सिंह कुम्पावत सामान्य स्थिति के राठौड़ राजपूत थे एवं युवराज सरदारसिंह की सेवा चाकरी में बाल सेवक के रूप में कार्यरत थे। युवराज सरदारसिंह वयस्क होने से पूर्व ही मारवाड़ के राजा बन गए थे। उनके साथ रहते-रहते उगमजी बाल सेवक से बाल सखा बन गए। महाराजा से उनकी बहुत घनिष्टता बढ़ गई। महाराजा को हर समय उगमजी की जरूरत महसूस होने लगी। महाराजा ने उगम जी को चांदेलाव की जागीर बख्श दी एवं वहां का ठाकुर नियुक्त किया तथा यह रंगीन भवन भी उन्हें भेंट कर दिया। महाराजा के संरक्षक सरप्रताप ने उन्हें युरोपीय देशों की यात्रा पर भेजा तो उगमजी को भी सरदारसिंह जी अपने साथ ले गए। सरप्रताप के ईडर के महाराजा बनने के बाद रेजिडेन्ट जेनिंग ने महाराजा को सैनिक शिक्षा को देहरादून एवं बाद में पंचमढी (मध्यप्रदेश) भेजा वहां भी उगमजी हमराह रहे।

इस तरह महाराज सरदारसिंह का भवन उगमजी के बंगले के नाम से प्रसिद्ध हो गया। बाद में यह बंगला मारवाड़ का संग्रहालय नाम से जाना जाने लगा। 1935 में इस संग्रहालय को वर्तमान उम्मेद उद्यान में बने नए संग्रहालय एवं पुस्तकालय भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया और इस भवन में मारवाड़ रियासत का शिक्षा विभाग कार्यालय स्थापित किया गया। जिसके मुखिया ख्यातनाम शिक्षाविद् ए.पी. कॉक्स थे। आजादी के बाद इस भवन को मारवाड़ रियासत के महाराजा हनुवन्त सिंह ने जन सेवार्थ राजस्थान सरकार को भेंट कर दिया एवं राज्य सरकार ने इसमें न्यू गवर्नमेन्ट स्कूल को स्थापित किया जो आज तक संचालित है।

'गुरु पूर्णिमा और 30 जुलाई'

इस जुलाई माह में दो महत्त्वपूर्ण पर्व हैं। माह के प्रारम्भ में जहां गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया गया वहीं आगामी 30 जुलाई को हम सब हमारे आदर्श पूज्य नारायणसिंह जी का जन्म दिवस मनाने जा रहे हैं। लोग कह सकते हैं कि इन दोनों का क्या संबंध है लेकिन लोगों के लिए नहीं बल्कि हमारे लिए इन दोनों पर्वों का अंतर्सम्बन्ध बहुत महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में यदि गुरु पूर्णिमा को समझना है तो संघ के एक स्वयंसेवक के लिए 30 जुलाई को समझना बहुत जरूरी है। गुरु पूर्णिमा गुरु-शिष्य संबंधों का पर्व है, गुरु के प्रति शिष्य की कृतज्ञता का पर्व है वहीं 30 जुलाई ऐसे एक महान शिष्य का अवतरण दिवस है जिसने गुरु शिष्य परम्परा का आदर्श प्रस्तुत किया। शिष्य वही होता है जो गुरु की अपेक्षा पर खरा उतरे, शिष्य वह होता है जो गुरु के निर्देशन में अपनी मृणमयी देह में चिन्मय का आविष्कार कर देवे, शिष्य वह होता है जो साधारण से असाधारण बन जाए। शिष्य वह होता है जो अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए हर खतरे को मोल लेने को तत्पर रहे और वास्तव में तो शिष्य वह होता है जो अपने आपको अपने गुरु की प्रयोगशाला बनने को प्रस्तुत कर देवे और अपनी उस प्रस्तुति के माध्यम से अपने गुरु के हर सिद्धान्त को पुष्ट कर संसार के सामने उसकी उपादेयता एवं सार्थकता सिद्ध कर देवे। ऐसे ही शिष्य थे हम सबके श्रद्धेय नारायणसिंह जी रेड़ा जिनका 30 जुलाई 1940 को चुरु जिले के रेड़ा गांव में अवतरण हुआ और हर 30 जुलाई को हम उस अवतरण दिवस को उनका स्मरण कर उनसे प्रार्थना करते हैं कि उनका वह शिष्यत्व कुछ अंशों में ही सही पर हमारे में भी अवतरित हो क्यों कि जाने-अनजाने, चाहे अनचाहे भगवान ने हमें भी उन्हीं के मार्ग पर ला पटका है। उनका वह शिष्यत्व जिसने मात्र 19 वर्ष की आयु में उनको यह निर्णय लेने को प्रेरित किया कि अब से मेरे जीवन के सूत्रधार पूज्य तनसिंह जी हैं। उनका वह शिष्यत्व जिसने किसी लोकाचार की परवाह किए बिना उन्हें एकमुखी बनाया। उनका वह शिष्यत्व जिसने संघ परिवार को वास्तव में परिवार का रूप प्रदान किया। उनका वह शिष्यत्व जिसने उन्हें आदर्श स्वयंसेवक बनाया, जिसने उन्हें आत्मनिरीक्षण और फिर उसके अनुरूप व्यवहार करने की कला सिखाई, जिसने उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई उसमें माहिर बना दिया। उनका वह शिष्यत्व जिसने ज्योति को ज्योति में मिलने का मार्ग प्रशस्त किया। वह शिष्यत्व जिसने आसक्तियों का त्याग कर मृत्यु के पार जाने की कला सिखाई और उनका वह शिष्यत्व जिसने इस संघ आंगन को जन-मन का सुन्दर दिव्य चितेरा बना दिया। इस प्रकार हमारे लिए गुरु पूर्णिमा मनाना तब ही सार्थक है जब हम 30 जुलाई तक पहुंचे। यदि हमारे में 30 जुलाई घटित नहीं होती है, हमारे में पूज्य नारायणसिंह जी के उस शिष्यत्व का अवतरण नहीं होता है, हमारे में नान्य पंथा के भाव की दृढ़ता नहीं पैदा होती है तो हमारा गुरु पूर्णिमा मनाना एक रूढ़ि मात्र बनकर रह जाएगा और हम भटकते रहेंगे इधर से उधर। यदि भटकाव बंद करना है, यदि आगे बढ़ना है, यदि शिष्यत्व को सार्थक करना है तो हमें 30 जुलाई की ओर आना पड़ेगा और इस बात को समझना पड़ेगा कि एक के साधने से सब सध जाता है। एक के प्रति समर्पित होने से हमारा कर्तव्यपूर्ण हो जाता है और फिर हमारे को आगे बढ़ाने का दायित्व उसका हो जाता है जिसके प्रति हमारे में समर्पण जागा है और यदि उनको उचित लगेगा कि हमें किसी अन्य मार्गदर्शन की आवश्यकता है तो वे हमें उधर भी मोड़ देंगे लेकिन आवश्यकता उस शिष्यत्व की है जो 30 जुलाई को इस धरती पर अवतरित हुआ इसलिए आईए हम तो उन्हीं से प्रार्थना करें उस शिष्यत्व को अर्जित करने की क्षमता देने की जो हमारे लिए शिष्यत्व के आदर्श हैं और इसके लिए 30 जुलाई से उपयुक्त अवसर और कौनसा हो सकता है?

महेसाणा में महिला स्नेहमिलन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के महेसाणा प्रांत (गुजरात) में 2 जुलाई को महिला स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आसपास की 26 शाखाओं की महिलाओं एवं बालिकाओं ने भाग लिया। प्रातः 9 बजे से लेकर सायं 4 बजे तक चले स्नेहमिलन में विभिन्न कार्यक्रम हुए। श्रीमती जागृति बा हरदासका बास, श्वेता बा काणेटी, दीपका बा आदि ने उद्बोधन किया। खेल, सहगायन, चर्चा, परिचय आदि कार्यक्रमों द्वारा संघ को समझाने का प्रयास किया। पालोदर शाखा की बालिकाओं द्वारा तलवार रास प्रस्तुत किया गया। दोपहर का भोजन सभी ने साथ लिया। चर्चा में सभी ने अपने-अपने विचार रखे। प्रारम्भ से अंत तक आनंदमय वातावरण बना रहा।

गोहिलवाड़ में महिला शाखाएं

गुजरात के गोहिलवाड़ क्षेत्र में बालकों एवं युवकों के साथ महिलाओं की शाखा पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है। इस माह भाडली, कांभा में महिला शाखा प्रारम्भ की गई। भाडली में महिला शाखा के अतिरिक्त बालिकाओं एवं बालकों की अलग-अलग शाखाएं भी लगती हैं। महिला शाखा का संचालन कल्पना बा वावड़ी एवं देवुबा वणियागाम मिलकर करती हैं।

मुंबई की शाखाओं में चंदन कार्यक्रम

मुंबई में विगत वर्ष से नियमित रूप से शाखाएं लग रही हैं एवं वहां काम करने वाले प्रवासी राजस्थानी स्वयंसेवक अपनी व्यस्त जीवन चर्या में से भी समय निकाल कर नियमित शाखा में आते हैं। कुछ लोग अति व्यस्तता एवं कभी-कभी प्रमादवश अनियिमित हो जाते हैं। ऐसे लोगों को नियमित करने के लिए माह जुलाई में सभी ने मिलकर चंदन कार्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। इसके तहत जो स्वयंसेवक अनियमित हो गया है उसे आने का आग्रह किया जाता है और फिर भी नहीं आने पर शाखा के सभी स्वयंसेवक उससे मिलने उसके आवास पर जाते हैं। आवास पर जाने पर निश्चित रूप से अल्पाहार होता ही है इस प्रकार उसकी कुशल क्षेम भी पूछ लेते हैं और चंदन भी हो ही जाता है। मुंबई की शाखाओं की संख्या में इस चंदन कार्यक्रम का असर स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा है।

महिमामयी संघ

बरखा बहार है संघ, अमृत फुहार है संघ।
शीतल, पवित्र, निर्मल, गंगा की धार है संघ।
खुशबू की तरह पहुंचा, हर घर के द्वार संघ।
सुन्दर, कोमल फूलों का हार है संघ।।
क्षत्रिय इतिहास का एकमात्र सार है संघ।
तनसिंह जी का सुन्दर विचार है संघ।
रजपूती शान का आधार है संघ।
स्वयंसेवकों का स्नेहिल परिवार है संघ।।

-भावना चौहान

(पृष्ठ चार का शेष)

तनायन, जोधपुर

राम से पहले... इन चारों से बाहर कोई कामना नहीं होती और इन चारों की ही पूर्ति गीता के अनुसार भगवान स्वयं करते हैं बस केवल भजन की जागृति की आवश्यकता है। भजन की जागृति का उपाय गीता में है जो विगत 2000 वर्षों में जन सामान्य से दूर हो गई थी। आज उसका यथार्थ स्वरूप 'यथार्थ गीता' सहज उपलब्ध है। उसकी चार आवृत्ति कर उसके अनुसार चलना प्रारम्भ करें, भजन आरम्भ हो जाएगा। माननीय संघ प्रमुख श्री हर वर्ष की भांति इस बार भी अपने सहयोगियों सहित शक्तेशगढ़ पधारे थे। संघ के विभिन्न कार्यालयों एवं शाखाओं में भी गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया गया जहां हुई चर्चाओं में बताया गया कि श्रेष्ठता की ओर ले जाने वाला ही गुरु होता है जो हमारे अंतर की सद्वृत्तियों को जागृत करता है। हमारे जीवन में संघ हमें इस अंतर्संघर्ष में लगाकर सद्वृत्तियों की ओर अग्रसर करता है इसलिए संघ ही हमारा गुरु है।

शेखाजी शाखा, जयपुर

संपादकीय

'विरोध करें पर किसका'

समय-समय पर विभिन्न सामाजिक मुद्दों को लेकर हमारा समाज उद्वेलित होता है। सरकारों के पक्षपात पूर्ण रवैये के प्रति आंदोलन खड़े होते हैं। आक्रोशित समाज और इसमें भी विशेष कर युवा वर्ग ऐसे समय में अति प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इस प्रकार के वातावरण में विरोध और प्रतिक्रिया के अतिरेक में हम हमारे ही लोगों का विरोध करना शुरू कर देते हैं और ऐसे विरोध के प्रथम शिकार होते हैं हमारे समाज के राजनेता। प्रायः हमारी शिकायत होती है कि वे राजनेता राजपूत कोटे से टिकट पाते हैं, इसी कोटे से मंत्री बनते हैं एवं हमारे सहयोग से जीतते हैं तो फिर खुले रूप में हमारा साथ क्यों नहीं दे रहे। ऐसे में हम यह मान रहे होते हैं कि केवल हम ही समाज की समस्या के बारे में सोच रहे हैं या केवल हम ही कुछ कर रहे हैं शेष सभी निष्क्रिय हैं। ऐसे में हमारे विरोध की दिशा परिवर्तित हो जाती है और जिनका विरोध करना चाहिए उन्हें छोड़ कर हम अपनों का ही विरोध करना शुरू कर देते हैं। यहां हमारा यह अधिकार जताना एक सीमा तक सही हो सकता है कि किसी राजनेता को कोई पद या टिकट हमारे समाज के कोटे से मिलता है लेकिन यह एक कारक ही है, बल्कि यही मात्र कारक नहीं है उनके आगे बढ़ने का। इसके अलावा अन्य अनेक कारक इस दिशा में काम करते हैं और उन्हें वे उपेक्षित नहीं कर सकते। साथ ही हमारा यह मानना कि वे हमारा साथ नहीं दे रहे हैं एक मिथ्या सा ही आरोप है। यदि कुछ अपवादों को छोड़ देवें तो उनमें भी वही सामाजिक भाव होता है जिस सामाजिक भाव से प्रेरित होकर हम यह सब प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। हर व्यक्ति उस सामाजिक भाव को यथासंभव कार्यरूप भी देता है लेकिन उसकी अपनी सीमा होती है। हर व्यक्ति की अपनी सीमाएं एवं अपना तरीका होता है। ऐसे में हम हमारे ही लोगों को हमारे आक्रोश का शिकार बनाकर हमारी ताकत को कमजोर ही करते हैं, बढ़ाते नहीं हैं। प्रायः कुछ अति उत्साही हमारे राजनेताओं से त्यागपत्र देकर हमारे साथ आने या अपने ही दल का विरोध करने का आह्वान करते हैं लेकिन जरा व्यवहारिक बनकर विचार करें कि क्या यह संभव है? एक राजनेता का निर्माण वर्तमान परिस्थितियों में कितना कठिन व संघर्षपूर्ण है इसको हम सब को समझने की आवश्यकता है। एक विधायक या मंत्री की बात छोड़ें बल्कि एक सामान्य सा मंडल अध्यक्ष बनने के लिए भी कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं यह उन राजनेताओं के संघर्ष को नजदीक से देखकर समझा जा सकता है। निश्चित रूप से किसी राजनेता के बनने एवं आगे बढ़ने में समाज का योगदान होता है। जाति आधारित वर्तमान राजनीति में जाति के फैक्टर को नकारना वास्तविकता से आंख मूंद लेना है इसलिए हमारी जाति के राजनेताओं से हमारी अपेक्षा स्वाभाविक ही है लेकिन अपेक्षा के साथ-साथ उनको ही मिटाने की बात करना क्या अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा नहीं है? इस आलेख का उद्देश्य राजनेताओं का पक्ष लेना या उनको सुरक्षा देना नहीं है, उनकी भी समाज के प्रति उतनी ही जिम्मेदारी है जितनी हम सबकी इसलिए उनको भी गंभीरतापूर्वक अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करना चाहिए लेकिन उनको इतनी छूट तो हमें देनी ही चाहिए कि वे अपनी सुविधा के अनुसार अपनी स्थिति को देखते हुए उनकी स्वयं की परिस्थितियों के अनुरूप हमारे साथ आएं। साथ ही यह भी महत्त्वपूर्ण है कि वे आज कुछ हैं इसीलिए हम उनसे अपेक्षा करते हैं लेकिन यदि हम उनके उस होने पर ही चोट करते हैं या उनके उस रूप में अस्तित्व को ही हमारे साथ के लिए मिटाने की अपेक्षा करते हैं तो फिर क्या उनका साथ हमारे लिए इतना महत्त्वपूर्ण रह जाएगा। प्रायः हम इस मामले में एक समाज विशेष का उदाहरण देते हैं कि वे ऐसा कर सकते हैं तो ये क्यों नहीं? तो हर जाति का अपना स्वभाव होता है और हर जाति की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी-अपनी स्थिति है। अनेक जातियां हैं जिन्होंने वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में हमारी अपेक्षा अधिक ढंग से अपने आप को पनपाया है ऐसे में हम हर स्थिति में उनसे तुलना करें तो उसके अनुकूल हमारा व्यवहार भी अपेक्षित है। उन जातियों में एक-दूसरे के विरोधी राजनेता भी एक दूसरे को अपनी-अपनी पार्टी में आगे बढ़ाने में प्रयास करते हैं और पूरा समाज बिना किसी किन्तु-परन्तु के उनका साथ देता है जबकि यह वास्तविकता है कि हम उतनी शिद्धत से ऐसा नहीं कर पाते हैं। इसलिए हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस व्यवस्था में किसी भी व्यक्ति को कोई भी स्थान पाने में विशेष संघर्ष करना पड़ता है और उसमें हम सब का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग होता है।

ऐसे में किसी एक घटना या मुद्दे को लेकर उस संघर्ष एवं सहयोग पर पानी फेरना, 'म्हे ही खेल्या, म्हे ही बुझाण्या' जैसा है। यह केवल राजनीति पर ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य सभी क्षेत्रों में काम कर रहे हमारे लोगों पर भी लागू होता है। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि यदि हम कोई विरोध करें तो हमारे लोगों को बचाते हुए करें, उनको ही हमारे विरोध का शिकार नहीं बनाएं। साथ ही राजनीति व अन्य क्षेत्रों में काम कर रहे लोगों से यह अपेक्षा करनी ही चाहिए कि वे अपनी स्थिति को बचाते हुए सामाजिक मुद्दों को अपनी सीमा में पुरजोर ढंग से उठाएं ताकि समाज इस बात से निराश न हो कि हमारे ही लोग हमारा सहयोग नहीं कर रहे क्योंकि अपेक्षा तो उसी से की जाती है जो अपना होता है। लेकिन इस सबका अर्थ यह कदापि नहीं है कि अपने स्वार्थ के लिए या अपने आपको श्रेष्ठ एवं अलग सिद्ध करने के लिए सम्पूर्ण समाज की सामूहिक चेतना का विरोध करने वालों को भी हम सिर आंखों पर बिठाएं। समय आने पर ऐसे लोगों को तो उनकी गलती का अहसास कराया ही जाना चाहिए। कुल मिलाकर बात इतनी ही है कि हम हमारे विरोध का निशाना हमारे अपनों को ही बनाने की अपेक्षा उनको बचाते हुए इस लायक बनाए कि वे खुलकर हमारे साथ आ सकें।

मार्गदर्शक पदचिह्न — शिवसिंह, शार्दुलसिंह व सवाई जयसिंह

मध्यकालीन इतिहास की हम बात करते हैं तो प्रायः एक बात सामने आती है कि यह काल हमारे आपस में लड़ने का काल है। उत्तर मध्यकाल के बारे में तो यह बात विशेष रूप से कही जाती है। जब छोटी-छोटी बातों को लेकर हमारे छोटे-छोटे राज्य आपस में लड़कर अपनी शक्ति क्षीण किया करते थे। यह सब उस दौर में स्वाभाविक बन चुका था एवं व्यक्तिगत अहंकार, स्वार्थ एवं व्यक्तिगत वीरता ने सामूहिक सोच पर प्रहार कर अराजक सा माहौल बना दिया था ऐसा हमें इतिहास में पढ़ाया जाता है। लेकिन इतिहास को जानने का प्रयास करें तो हम पाएंगे कि उस तथाकथित अराजकता के माहौल में भी हमें अनेक उदाहरण ऐसे मिल जाएंगे जो हमें संगठन, बंधुत्व एवं प्रगतिशीलता की सीख देते हैं। ऐसा ही उदाहरण है सीकर को एक गांव से व्यवस्थित राजधानी का स्वरूप प्रदान करने वाले राव शिवसिंह जी, भोजराजजी का शेखावतों के वीर पुरुष एवं दूसरे शेखाजी के नाम से पहचाने जाने वाले शार्दुलसिंह जी व आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के बीच पनपी आपसी समझ। शेखावाटी एवं शेखावत शाखा से संस्थापक राव शेखा ने अपने पितामह बालाजी के समय से आमेर को भेजे जाने वाले बछेरे की परम्परा बंद कर स्वयं को आमेर से स्वतंत्रत राज्य घोषित किया एवं स्वतंत्र शेखावटी जनपद की स्थापना की। कालांतर में अनेक पीढ़ियों के पश्चात् वीरभान का बास नामक गांव को सीकर का रूप देने वाले राव दौलतसिंह जी के समय आमेर से पुनः मधुर संबंध स्थापित हुए एवं दौलतसिंह जी ने सवाई जयसिंह जी को अपने वंश के मुखिया के रूप में सम्मान देने के साथ-साथ स्वयं को उनका अनुगामी बनाया। खण्डेला से वैरभाव होने के बावजूद अजमेर के सुबेदार द्वारा खण्डेला पर आक्रमण करने पर सभी शेखावत इस भाव से एकजुट हुए कि हमारे आपसी झगड़े चलते रहेंगे लेकिन बाहरी दुश्मन से लड़ने के लिए हम सबको एक होकर संघर्ष करना चाहिए। राव दौलतसिंह जी की इसमें पूर्ण सहमति थी। राव दौलतसिंह जी के बाद उनके पुत्र राव शिवसिंह जी संवत् 1778 में सीकर के शासक बने एवं उन्होंने सीकर को ढंग से बसाना प्रारम्भ किया। दिल्ली से बादशाह ने शिवसिंह जी पर हमले के लिए जानिसार खां को भेजा तब सवाई जयसिंह जी ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर जानिसार खां को वापिस बुलवाने का आदेश जारी करवाया। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी — अपेक्षा, उपेक्षा और आडवाणी

कुछ शब्दों का गठन इस प्रकार किया हुआ है कि उसमें थोड़ा सा उलटफेर अर्थ को विपरीत कर देता है। शब्दों में तो एक आधा वर्ण ही बदलता है लेकिन जीवन व्यवहार में उनके अर्थ में आया परिवर्तन एकदम विपरीत हो जाता है। अपेक्षा और उपेक्षा भी दो ऐसे ही शब्द हैं। देखने में तो इन दोनों में केवल एक वर्ण 'अ' व 'उ' का स्थानापन्न होता है लेकिन व्यवहार में कितना बड़ा परिवर्तन हो जाता है इसका आदर्श उदाहरण है भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पार्टी के संस्थापक सदस्य लालकृष्ण आडवाणी। भारतीय जीवन पद्धति जीवन जीने का आदर्श ढंग प्रस्तुत करती है और उसमें उम्र के निश्चित पड़ावों पर अपेक्षाओं में परिवर्तन का वैज्ञानिक विभाजन है। जहां-जहां इस वैज्ञानिक विभाजन की अवहेलना की जाती है वहां अपेक्षा का स्थान उपेक्षा ले लेती है। इसी का परिणाम है कि भारतीय जनता पार्टी को 2 से 200 तक पहुंचाने वाला शख्स आज उपेक्षा का दंश झेल रहा है। जिस पार्टी में उनकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता था आज उसी पार्टी में राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार चयन करने की सूचना तक उचित सम्मान के साथ उन्हें नहीं दी जाती। आज हमारे माननीय प्रधानमंत्री विपक्षी पार्टी कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी को फोन कर राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार चयन की सूचना अवश्य देते हैं लेकिन कभी उनके स्वयं के मार्गदर्शक रहे एवं कालांतर में मार्गदर्शक मंडल के तमगे से नवाजे गए आडवाणी जी को अधिकारिक रूप से उनके द्वारा ऐसी कोई सूचना दी गई हो ऐसा किसी समाचार माध्यम में नहीं आया। इस उपेक्षा का कारण ढूंढ़गे तो अपेक्षा निकल कर आएगी। एक अपेक्षा जो उम्र के निश्चित पड़ाव के बाद छूट जानी चाहिए थी लेकिन बनी रही और वह जब अगली पीढ़ी के आड़े आने लगी तब उपेक्षा जन्मी और वह उपेक्षा इतनी प्रबल हुई की सामान्य शिष्टाचार को किनारे करती हुई सीबीआई रूपी सरकारी तोते के इस्तेमाल तक पहुंच गई। भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति की बात करने वाले लोगों के लिए यह तो विचारणीय आवश्यक है कि ना तो यह अपेक्षा भारतीय संस्कृति का आदर्श है और ना ही यह उपेक्षा भारतीय संस्कारों की उपज है। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	शिक्षक शिविर	23.07.2017 से 23.07.2017 तक	महाराजा गजसिंह राजपूत छात्रावास ओसियां (जोधपुर)।
2.	प्रा.प्र.शि.	29.07.2017 से 31.07.2017 तक	राजपूत छात्रावास, वल्लभीपुर, गुजरात।
3.	प्रा.प्र.शि.	02.08.2017 से 04.08.2017 तक	शिवदानसिंह भोमिया का स्थान, अर्जुना (जैसलमेर)। रामगढ़ मोहनगढ़ मार्ग पर स्थित।
4.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 06.08.2017 तक	जसपरा, मोरचंद प्रांत, गुजरात।
5.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	राजपुरा (सीकर)। लोसल के साधन उपलब्ध।
6.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	मेड़ी का मगरा, कोलायत बीकानेर बाप, गिरिजासर, कोलायत से बस उपलब्ध।
7.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	जैन मंदिर सालावास रोड, तनावड़ा, जोधपुर (पहले यह जय भवानी नगर के नाम से छपा था)
8.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	धीरपुरा केतु, जोधपुर। जोधपुर-जैसलमेर हाईवे पर फलोदी रोड फांटा के पास।
9.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	आशापुरा फार्म हाउस, पचानवा (जालोर)। जालोर-तखतगढ़ मार्ग पर स्थित उम्मेदपुर से हरजी रोड पर 3 किमी दूर।
10.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017 तक	दुर्गादास छात्रावास, पाली।
11.	प्रा.प्र.शि.	04.08.2017 से 07.08.2017	बाढ मोचिंग पुरा, जिला दौसा।
12.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	तेजमालता (जैसलमेर)। जैसलमेर से प्रातः 9 बजे, अपराह्न 3 बजे व फतेहगढ़ से सायं 5 बजे बस उपलब्ध।
13.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	मारूड़ी (बाड़मेर)। बाड़मेर से रामसर सड़क मार्ग पर मारूड़ी उतरें। वहां से जुगतसिंह जी के कृषि फार्म पहुंचे।
14.	प्रा.प्र.शि.	05.08.2017 से 08.08.2017 तक	रानीवाड़ा (जालोर)। रानीवाड़ा-सांचौर बाईपास मार्ग पर सरिया देवी स्थल।
15.	बाल शिविर	06.08.2017 से 07.08.2017 तक	संघ शक्ति परिसर, जयपुर।
16.	बाल शिविर	06.08.2017 से 07.08.2017 तक	भिंयाड़ (बाड़मेर) बाड़मेर से भिंयाड़ के लिए बसें उपलब्ध है।
17.	बाल शिविर	12.08.2017 से 13.08.2017 तक	महाराणा कुंभा छात्रावास, भीलवाड़ा।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	आंजना महादेव मंदिर भीलवाड़ा। भीलवाड़ा देवगढ़ मार्ग पर।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	मडिया (सिरोही)। जालोर से रामसीन होकर, सिरोही से कालन्द्री होकर व रेवदर से जसवंतपुरा होकर मडिया पहुंचे।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	जालेटी माता मंदिर कोलर (पाली)। जोजावर व मारवाड़ जंक्शन से बसें उपलब्ध।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	नरोड़ा (गुजरात) अहमदाबाद स्टेशन से 10 किमी दूर।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	पडुस्मा (गुजरात) विसनगर माणसा हाईवे, विकास चौराहा से 5 किमी दूर चामुण्डा माता मंदिर।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 04.09.2017 तक	बरजांगसर (बीकानेर) श्री डूंगरगढ़-कातर मार्ग पर। श्री डूंगरगढ़ से (9, 11 व 1.30 बजे बसें उपलब्ध)।
24.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	02.09.2017 से 04.09.2017 तक	मोरचंद (गुजरात)।
25.	बाल शिविर	02.09.2017 से 03.09.2017 तक	नारायण निकेतन बीकानेर

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

मीरा महिमा

श्रवणसिंह राजावत

गरब गळ्यो है गोपियां, देखत मीरा रूप।
मोहन खातर मारयो, सुन्दर सकल स्वरूप।।621।।

भगती इतना भाव सूं, नहीं देखि मैं नाय।
राजधरा री राजसी, आ लीनी अपनाय।।622।।

हुवै न कोई होड़, मीरा भगती मान री।
जनमी एहड़ी जोड़, ब्रज माही अब तलक।।623।।

गोकुल री गोपियां, सुनकर आई साद।
मोहन नाम ऊचारता, या कुण करती याद।।624।।

ग्वाला गांव गिरीराज रा, भेला हुया भाग।
मोहन शब्द मन माहि, उपजावै अनुराग।।625।।

ग्वाला अर गोपियां, दोन्यू रह्या देख।
मीरा रटती माधवा, लिख्या लिलाड़ी लेख।।626।।

सुध बिसरी शरीर री, मन रो नहीं मुकाम।
खड़काती खड़ताल ने, सदा सुमरती श्याम।।627।

मीरा भगती मगन, दूजी म्हे देखी नहीं।
लागी एहड़ी लगन, छोड्यां सूं छूटे नहीं।।628।।

सुन्दर म्हारो सांवरो, जनमयो जठै जाय।
गोपियां ए उण गांवरी, धिन है थारी धाय।।629।।

इण धर पर आवियो, तीन लोक को नाथ।
नमन करूं इण भोम ने, मैं लगा के माथ।।630।।

गोकुल जेड़ो गांव, दुनियां में न दूसरो।
ठाकर कीनो ढांव, बालपना में बहुत।।631।।

आणंद पायो आज, इण धरा पे आयके।
आती मधुर आवाज, मुरली री मन मोवनी।।632।।

मीरा के रहवे मन, कृष्ण री कलख सदा।
बिचरती दास बन, मोहन मंदिर मायने।।633।।

मीरा मन मोहन बिना, रुके नहीं पल एक।
विरहण ज्यूं बिलखती, दरसण री कर टेक।।634।।

सांस बसायो सांवरो, जपती ज्यूं अणजाप।
सूरत लागी श्याम सू, बोलो आपू आप।।635।।

और न कोई ईषणा, किसना सू बस काम।
खरच्या सूं दूणा बढ़े, राम जाप रा दाम।।636।।

वृंदावन माही बसे, जीव गुसाई संत।
नाम सुण्यो जद मेड़तणी, हिया में हरखंत।।637।।

मिलबा को मतो कर्यो, साधुड्या ले साथ।
खड़ताला खड़कावती, हरिमाला ले हाथ।।638।।

गोविंद रा गुण गावती, पहुंची संता द्वार।
सेवक आया सामने, ऊभा आडा आर।।639।।

रूको अठे रावले, पूछां माही जाय।
संत म्हारा ऊंचा घणा, मिलसी थांसू नाय।।640।।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141- 4015747
website : www.springboardindia.org

श्री सद्गुरु भगवान छात्रावास एवं कोचिंग सेंटर
एसबीआई बैंक के सामने, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के आवास की सुंदर व्यवस्था
अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या
पौष्टिक एवं सात्विक आहार
कक्षा 6 से 12 तक कोचिंग सुविधा
वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन
संपर्क सूत्र: नत्थुसिंह छापड़ा 7073305111, 9772097087

मालवा में सम्पर्क यात्रा

गंगासिंह साजियाली (संभाग प्रमुख मेवाड़-मालवा) में गुमानसिंह वालाई व लक्ष्मणसिंह बड़ोली की टीम ने तीन दिवसीय सम्पर्क यात्रा में 07 जुलाई से 09 जुलाई तक मालवा (मध्यप्रदेश) में रही। तीन स्वयंसेवकों की टीम 7 जुलाई को प्रातः 11 बजे रतलाम पहुंची। रतलाम में बालिका शिविर स्थल देखा। स्थानीय सहयोगी कृष्णेन्द्रसिंह सेजावता ने शिविर लगवाने की जिम्मेदारी ली। तत्पश्चात् ब्रजराजसिंह 'ब्रज' कवि व चतुरसिंह म्याजलार से मिले। उन्होंने कृष्णेन्द्रसिंह के साथ मिलकर बालिका शिविर लगवाने की जिम्मेदारी ली। संघ शक्ति, पथ प्रेरक के ग्राहक बनाए और जावरा के लिए रवाना हो गए। जावरा में डॉ. हमीरसिंह से राठौड़ नर्सिंग होम पर मिले। श्री क्षत्रिय युवक संघ की चर्चा की। यहीं से नारायणसिंह चिकलाना हमारे साथ हुए। उनका हर बार ही बहुत अच्छा सहयोग रहता है। उनकी इस क्षेत्र में जान-पहचान व सम्पर्क बहुत होने से रास्ते व किससे मिलना है इसमें सहयोग रहता है। शाम 7 बजे जावरा से अयाना पहुंचे। स्थानीय राजपूत सरदारों से चर्चा की। उन्होंने एक शिविर प्रा.प्र.शि. दिसम्बर में रखने का प्रस्ताव रखा और शिविर अवश्य करवाना इसके लिए हमें पाबंद किया। 08 जुलाई को सवेरे जल्दी तैयार होकर हम बर्डिया बोयल पहुंचे। संघ शक्ति पथ प्रेरक के ग्राहक बनाए। श्री क्षत्रिय युवक संघ की चर्चा की। वहां से खजूरी में नेपालसिंह से मिले। खजूरी से बण्डवा में बालूसिंह के यहां पहुंचे। उन्होंने गांव वालों को इकट्ठा कर रखा था। स्नेहमिलन कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ की महत्ता बताई और स्थानीय लोगों को इससे जुड़ने की चर्चा की। संघ शक्ति व पथ प्रेरक के ग्राहक बनाए, साहित्य दिया। बण्डवा से ताल पहुंचे व वीरेन्द्रसिंह ताल से मिले। उनके स्कूल में शिविर हेतु अवलोकन किया। संघ शक्ति व पथ प्रेरक के ग्राहक बनाए। प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के लिए अनुकूल जगह होने से यहां शिविर लगवाना तय हुआ। ताल से विक्रमगढ़ पहुंचे जहां मदनसिंह सोलंकी से मिलने पहुंचे। पिछली बार भी शिविर इन्होंने ही आयोजित किया था। अतः इस शिविर के आयोजक भी इन्हें बनाया। विक्रमगढ़ से दोपहर 4 बजे नाग खजूरी, जिला मन्दसौर के लिए रवाना हुए। नाग खजूरी में महेन्द्रसिंह फतहगढ़ के आयोजन में एक स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा। करीब दो सौ की संख्या में युवा व प्रौढ़ क्षत्रिय बन्धु एकत्रित हुए। स्थानीय बंधुओं से श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में विस्तार से चर्चा की। उपस्थित समाज बंधुओं ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ इस तरह युवाओं में संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है यह तो हमें आज आप लोगों द्वारा पता चला। महेन्द्रसिंह फतहगढ़ का आभार व्यक्त किया कि आपने ऐसे पवित्र व हमारे लिए अति उपयोगी संस्थान से परिचय करवाया। आप तो शिविर का

आयोजन करो, हम शिविर की व्यवस्था भी करेंगे और शिविरार्थियों को भी भेजेंगे। आपको कुछ नहीं करना। तत्पश्चात सामूहिक भोज का आयोजन रखा। रात्रि विश्राम महेन्द्रसिंह फतहगढ़ के फार्म हाउस पर किया।

सवेरे 9 बजे तैयार होकर हम सुवासरा महेन्द्रसिंह के साथ पहुंचे। तीन चार सज्जन और साथ थे। सुवासरा में स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया था। कार्यक्रम का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। लोगों ने बताया कि यहां तो शिविर सुवासरा या परासली में रखा जावे। व्यवस्था व शिविरार्थियों को भेजने की जिम्मेदारी हमारी। 'वो कौम न मिटने पाएगी' सहगायन गाया व उसका अर्थ समझाया तो उपस्थित लोग प्रभावित हुए, उनको अच्छा लगा। पूरा साहित्य खरीद लिया। संघ शक्ति, पथ प्रेरक के ग्राहक बने। संघ साहित्य की मांग बनी ही रही। तत्पश्चात् अन्य गांवों में भी सम्पर्क करते हुए फतहगढ़ आ गए। महेन्द्रसिंह के साथ भोजन किया। दोपहर बाद विसर्जन कर वापस राजस्थान की ओर लौट पड़े। सम्पर्क यात्रा प्रभावशाली रही।

- लक्ष्मण सिंह बड़ोली

मैं अबोध हूं

(व्यंग्य)

मैं अबोध हूं, फिर भी चाहता हूं कि सब मुझसे सीखें। मेरा अनुसरण करें जबकि सीखना पहले मुझे चाहिए। लेकिन मैं मूर्ख तो यह ऐसा है, वो वैसा है यही पंचायती करता हूं और दूसरों की गलतियां खूब निकालता हूं पर खुद कुछ सीखने का प्रयास नहीं करता। करूं भी कैसे क्यों कि मेरा स्वार्थ तो मुझे कहता है कि तूं बस मेरे पीछे भाग। मैं उसके पीछे भागता हूं और धर्म, कर्तव्य, समाज, चरित्र आदि के संबंध में केवल दिखावा ही करता हूं क्यों कि इनको अगर स्वयं पर लागू करूं तो मेरा स्वार्थ पीछे छूट जाता है और वह मुझे मंजूर नहीं। भक्ति में तो मेरा जवाब नहीं। राजनीतिक दल मेरे साध्य है और मैं साधक। वहां तक पहुंचना और अपने साध्य का चहेता बनने के लिए सामाजिक मूल्यों को ताक पर रखना मेरी इसी भक्ति का एक अंश है। लोगों से बहस इसलिए करता हूं कि कहीं मुझे सद्बुद्धि न आ जाए क्यों कि वो तो मेरी इस भक्ति में बाधक होगी।

श्रीपालसिंह सलोदरिया

प्रतिभाएं

समिक्षा व अनुप्रिया शेखावत

हमीरसिंह कालीपहाड़ी हाल निवास हनुमानगढ़ टाउन की पुत्री समिक्षा शेखावत ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित 10वीं कक्षा की परीक्षा में 9.4 सीजीपीए प्राप्त किए हैं। समिक्षा बी.एम. पब्लिक स्कूल हनुमानगढ़ टाउन की छात्रा है।

समिक्षा की बड़ी बहन अनुप्रिया शेखावत ने भी उसी विद्यालय में अध्ययन करते हुए 10वीं कक्षा की परीक्षा में 7 सीजीपीए प्राप्त किए है।

अनिरुद्ध सिंह

जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के बास बनेठी गांव के निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत बजरंगसिंह तंवर के पुत्र अनिरुद्ध सिंह का एक्सेस बैंक की नीति निर्माण कंपनी में उच्च पद पर चयन हुआ है। अनिरुद्धसिंह प्रारम्भ से ही होनहार छात्र रहे हैं एवं इनका चयन प्रथम प्रयास में ही प्रतिष्ठित संस्था आई.आई.टी. मुंबई में हो गया था। इनके पिता बजरंगसिंह सार्वजनिक निर्माण विभाग में अभियंता हैं एवं माता ताराकंवर गृहणी हैं। बहिन भाग्यश्री कंवर भी बड़े भाई के पदचिह्नों पर अग्रसर है।

(पृष्ठ एक का शेष)

आक्रोशित समाज...

सरकार द्वारा व्यक्त की गई प्रसन्नता, गृहमंत्री के घटना से अनभिज्ञ होने संबंधी बयान, एसओजी प्रमुख आईपीएस दिनेश एम.एन. का घटना से स्वयं को बचाने संबंधी बयान एवं घटना में शामिल पुलिस अधिकारियों के अलग-अलग बयानों ने शक के घेरे को मजबूत किया और आम समाज में यह धारणा प्रसारित हुई कि आनंदपाल ने आत्म समर्पण कर दिया था लेकिन उसके बाद उसकी हत्या कर इसे एनकाउंटर का रूप दिया गया है। ज्यों-ज्यों यह धारणा प्रसारित होती गई त्यों-त्यों पूरे समाज में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होने लगी।

जसवंतसिंह जी प्रकरण के बाद से ही समाज में प्रदेश की सरकार के प्रति एक नाराजगी है और वह नाराजगी गाहे-बगाहे प्रकट होती रहती है। इस घटना में सरकारी अन्याय की प्रतिध्वनि ने पुनः इस नाराजगी को प्रकट किया एवं रावणा राजपूत समाज के संगठनों द्वारा सहयोग मांगने पर राजपूत सभा जयपुर के नेतृत्व में संघर्ष समिति गठित कर आनंदपाल के परिवार को न्याय दिलाने की मांग की जाने लगी।

सरकार का रवैया इस पूरे प्रकरण में कहीं भी ऐसा नहीं लगा कि वह इतने बड़े जनमानस की चेतना के प्रति तनिक भी संवेदनशील है। सरकार द्वारा इसे बहुत हल्के में लिया गया एवं ओछी हरकतों द्वारा आंदोलन को दबाने के प्रयास किए जाने लगे। आनंदपाल के गांव सांवराद जाने वाले लोगों को जबरदस्ती रोका जाने लगा। उसके परिवार को परेशान करने के समाचार भी आए। मीडिया को मैनेज कर इस पूरे आंदोलन को एक अपराधी के समर्थन का आंदोलन प्रचारित करने का प्रयास किया गया। पूरे प्रकरण में ऐसा लगा जैसे सरकार तानाशाही रूख अपनाकर इतने बड़े जनमानस की चेतना को कुचलने का प्रयास कर रही है। इस प्रकार के सरकारी रवैये ने आग में घी का काम किया एवं एक अपराधी होते हुए भी आनंदपाल की मौत समाज के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बनने लगी। इसी प्रतिष्ठा के प्रश्न ने राजपूत समाज, रावणा राजपूत समाज एवं अन्य समाजों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर आने को मजबूर किया। एक अपराधी को उसके किए की सजा मिलनी ही चाहिए, इसके लिए इस आधार पर छूट नहीं मिल सकती कि वह अपराधी किन कारणों से बना लेकिन सजा देने के लिए देश के संविधान ने न्यायिक व्यवस्था बनाई है। उस न्यायिक व्यवस्था की अवहेलना कर पुलिस द्वारा अपराधी की हत्या की जाए और एक जवाबदेह सरकार उस हत्या की निष्पक्ष जांच की मांग भी स्वीकार करने में हठधर्मिता दिखाए तो इसे सरकारी अन्याय ही कहा जाएगा और इसी सरकारी अन्याय की प्रतिक्रिया है आनंदपाल प्रकरण। इसी प्रतिक्रिया का प्रकट रूप था 12 जुलाई का प्रदर्शन एवं उसमें स्वतः स्फूर्त रूप से जुटी लाखों की भीड़। लेकिन सरकार ने जान बुझकर वार्ता में देरी कर इस भीड़ को भी उग्र होने को मजबूर किया। सुबह 10 बजे से लोग आ रहे थे लेकिन 4 बजे तक तो वार्ता शुरू भी नहीं की। जब वार्ता प्रारम्भ हुई तो इसमें अनावश्यक देरी कर भीड़ के सब्र की परीक्षा ली जाती रही। अंत में भीड़ उग्र हुई लेकिन उस उग्रता की जांच की जानी आवश्यक है क्यों कि अनेक प्रकार के अंदेशे जताए जा रहे हैं। दूसरे प्रदेशों से भी अनेक अनपेक्षित लोगों के इस उग्रता में शामिल होने के समाचार आ रहे हैं। यहां भी सरकारी की मंशा आंदोलन को विफल करने की स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर हुई। जहां तक अंतिम संस्कार का प्रश्न है यह समाज का नहीं परिवार का निर्णय था और समाज ने अनेक बार परिवार को समझाया था। लेकिन समाज जबरदस्ती तो नहीं कर सकता था। लेकिन यह सब सरकारी पक्ष है और लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस प्रकार की सरकारी हठधर्मिता का हर जिम्मेदार नागरिक को विरोध करना ही चाहिए लेकिन विचारणीय विषय यह भी है कि क्या हम इस विरोध को ढंग से कर पाए? क्या इस विरोध को एकमात्र लक्ष्य मानकर हमने अनेक पक्षों की अवहेलना नहीं की जो दूरगामी रूप से हमारे समाज के लिए अहितकार होंगे। इस अन्याय का विरोध करते समय क्या हमारे जोशीले युवाओं एवं प्रतिक्रियावादी सामाजिक संगठनों ने एक अपराधी को ही शहीद घोषित करना शुरू नहीं कर दिया और यदि अनेक निर्दोष लोगों को सताने वाला अपराधी शहीद है तो फिर हम क्या हमारे समाज के इतिहास पुरुषों को भी इस श्रेणी में रख पाएंगे? इस प्रकरण में हमारे व्यवहार ने अनेक कटु सत्यों को उजागर किया जो भविष्य में हमारे समाज के स्वास्थ्य के लिए घातक होंगे। लगभग विगत 15 वर्षों में अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं द्वारा युवाओं की भावनाओं का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को सामाजिक स्वरूप देकर किया गया और उसी का परिणाम है कि ऐसी एक परिपाटी बन गई है। आज कोई भी हमारे समाज के युवकों के होश विहीन जोश को अपनी स्वार्थ सिद्धि में उपयोग कर लेता है। इस प्रकरण ने यह भी स्पष्ट किया कि हम आज भी जमाने के हथियारों को अपनाने को तैयार नहीं है। आज भी हम पुरानी सोच के साथ जी रहे हैं और हर जगह मारने-काटने की बात करते हैं जबकि आज के जमाने में पुलिस एवं प्रशासन से आमने-सामने की लड़ाई में कोई नहीं जीत सकता। पूर्वोत्तर के लोग वर्षों से हिंसात्मक संघर्ष कर रहे हैं, वाजिब मांगों को लेकर संघर्ष प्रारम्भ करने वाले नक्सली हिंसात्मक तरीकों से अब तक क्या हासिल कर पाए? इसके लिए संविधान ने हमे अनेक हथियार उपलब्ध करवाए हैं लेकिन हम हैं जो उधर बढ़ना ही नहीं चाहते। जरा विचार करें कि क्या इसी प्रकरण का हल न्यायिक प्रक्रिया में इससे बेहतर रूप में उपलब्ध नहीं था लेकिन अपने जोश में बावले हुए युवा उधर बढ़ना ही नहीं चाहते। हम कहीं और से नहीं सीखना चाहते तो आजादी के बाद हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए भूस्वामी आंदोलन से ही आंदोलन का तरीका सीखें। इस प्रकरण से एक बात और स्पष्ट हुई कि जो लोग समाज के ही बल पर आगे बढ़े, सामाजिक चेतना ने जिन्हें सर आंखों पर बिठाकर आगे बढ़ाया वे ही आज सामाजिक चेतना की अवहेलना कर अपनी व्यक्तिगत छवि की चिंता में पीले पड़े जा रहे हैं और इसके लिए वे सामाजिक चेतना के खिलाफ सार्वजनिक बयानबाजी से भी बाज नहीं आते। ऐसे लोग अपने आपको समाज से ऊपर मानते हैं एवं साथ ही यह भी मानते हैं कि समाज तो झख मारकर इनके साथ ही रहेगा। इस प्रकरण ने एक बात और स्पष्ट की कि अपरिपक्व लोग यदि जोशीले युवाओं के आगे खड़े होते हैं तो वे परिपक्व सामाजिक नेतृत्व को भी सामाजिक एकता के नाम पर अपने साथ खड़ा रहने को मजबूर करते हैं लेकिन ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि काठ की हांडी बार-बार चुल्हे पर नहीं चढ़ाई जाती। साथ ही वे यदि यह सोचते हैं कि उनकी व्यक्तिगत नेतागिरी को समाज लंबे समय तक सहन करता रहेगा तो यह उनकी गलत फहमी है। यह समाज युधिष्ठर के वयं पंचाधिकशतम् सिद्धांत को स्वीकार करता है तो समय आने पर अधर्मियों के विनाश हेतु शेष 100 का विनाश करने से भी नहीं चूकता। साथ ही इस प्रकरण ने इस बात को भी स्पष्ट किया कि समाज के लोकतांत्रिक शिक्षण की कितनी अधिक आवश्यकता है? समाज के युवा होते किशोरों को अपने जोश को होश के नियंत्रण में लाने की कला सिखाने की कितनी अधिक आवश्यकता है? उनमें सही गलत की पहचान पैदा कर सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति संजीदगी पैदा करने की कितनी अधिक आवश्यकता है? ऐसे में समाज में काम कर रहे संजीदा लोगों को इस बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए।

(पृष्ठ चार का शेष)

शिवसिंह....

सबसे महत्त्वपूर्ण समझ एवं साझेदारी उस समय शार्दुलसिंह जी एवं शिवसिंह जी में पनपी। शार्दुलसिंह जी के प्रस्ताव पर शिवसिंह जी ने सहमति दी और दोनों ने मिलकर संवत् 1786 में झुंझुनूं को कायम खानियों से हस्तगत किया एवं वहां पर शेखावतों का शासन स्थापित किया। इसी प्रकार फतेहपुर में भी नवाब का शासन था। दोनों शेखावत राजाओं ने साझेदारी एवं समझदारी से संवत् 1787 में फतेहपुर को भी सीकर के अधीन हस्तगत कर लिया गया एवं सवाई जयसिंह द्वितीय ने दिल्ली के शाही दरबार में उनके इस प्रयास का समर्थन करते हुए झुंझुनूं पर शार्दुलसिंह जी के एवं फतेहपुर पर शिवसिंह जी के कब्जे को वैधता दिलवाई। इस प्रकार की समझ एवं साझेदारी के अनेक उदाहरण हमारे उत्तर मध्यकालीन इतिहास में भी मिल जाएंगे जब हमने बाहरी दुश्मन से लड़ने के लिए अपने छोटे-मोटे आपसी मतभेद भुलाए एवं किसी एक पर आए संकट को सबका संकट मानकर संघर्ष किया। साथ ही उस दौर में जब सब कोई अपने आपको स्वतंत्र घोषित करने को उतावले थे उस समय चलाकर अपने वंश के प्रमुख की अगुवानी स्वीकार करना अपने आप में प्रगतिशीलता का उदाहरण है और ऐसा स्वयं के अहंकार को तिरोहित किए बिना नहीं हो सकता। राव दौलतसिंह एवं राव शिवसिंह द्वारा प्रारम्भ किया यह प्रयास बाद के अनेक वर्षों तक बना रहा और सीकर वाले सदैव जयपुर के सहयोगी के रूप में खड़े रहे वहीं जयपुर वालों ने सदैव संरक्षक की भूमिका अदा की। इस प्रकार इतिहास में ढूंढ़ने जाएं तो हमें अनेक ऐसे अवसर मिल जाएंगे जो यह सीख देते हैं कि वीरता एवं स्वाभिमान के साथ यदि समझदारी का मिश्रण हो जाए, जोश को यदि होश के अधीन कर दिया जाए तो हम क्या नहीं कर सकते लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि क्या हम हमारे जोश को होश के नियंत्रण में रख पाते हैं? क्या हमारी कर्मशीलता हमारी बुद्धि से प्रेरित होती है और क्या हमारी बुद्धि हमारे हृदय की अनुगामी बन भातृत्व भाव की त्रिवेणी का हिस्सा बन पाती है? क्या हम हमारे शरीर, बुद्धि और हृदय को विवेकशीलता में बांध पाते हैं? यदि ऐसा नहीं हो तो हमारा जोश हमें ही खाने को तत्पर हो जाता है और उसकी उसी तत्परता का हम आज शिकार हो रहे हैं। ऐसे में समझ, सहयोग और प्रगतिशीलता के ऐसे उदाहरण हमारे लिए मार्गदर्शक पदचिह्न बन सकते हैं।

अपेक्षा...

हां मध्यकालीन भारत के मुस्लिम शासकों में इस प्रकार के उदाहरण बहुतायत में भरे पड़े हैं जब पहली पीढ़ी की अपेक्षा को अगली पीढ़ी की उपेक्षा ने रौंदा और इसी का परिणाम हुआ कि पहली पीढ़ी को जबरन सत्ताच्युत कर या तो हत्या की गई या जेलों में सड़कर मरने के लिए छोड़ दिया गया। भारतीय आदर्श तो महाभारत कालीन मथुरा से निकलता है जब मामा कंस की उपेक्षा के शिकार वृद्ध नाना को भगवान कृष्ण ने मामा को मारकर न केवल मथुरा का शासक बनाया बल्कि अपने स्वयं के द्वारा स्थापित द्वारिका का भी शासक बनाया। उम्र के निश्चित पड़ाव पर स्वतः ही मार्गदर्शक की भूमिका में आने के उदाहरण तो भारतीय व्यवस्था में हर घर में मिल सकते हैं लेकिन अफसोस इस बात का है कि भारतीयता की बात कर सत्ता की सीढ़ियां चढ़ने वाले लोगों ने इस भारतीय आदर्श को अपने पास भी नहीं फटकने दिया और इसी का परिणाम है कि पार्टी द्वारा दो-दो बार प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित होने के बाद भी आडवाणी जी की प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार ताउम्र बने रहने की अपेक्षा बनी रही और दूसरी तरफ प्रधानमंत्री पद को शीघ्र प्राप्त करने की चाह रखने एवं फिर आगे भी इस पर बने रहने की चाह पाले अगली पीढ़ी ने अपनी मार्गदर्शक पीढ़ी की उपेक्षा के कीर्तिमान स्थापित कर दिए। पुरानी पीढ़ी अपनी अपेक्षा के कारण दंश झेल रही है और अपनी उस अपेक्षा के इस दंश से इतनी मजबूर है कि सार्वजनिक रूप से स्वैच्छिक संन्यास की घोषणा तक नहीं कर पा रही है। साथ ही अपना बुढ़ापा बिगड़ने के डर से एवं अपने ही तैयार किए हुए लोगों की उपेक्षा के भय से इतनी मजबूर है कि अपने मन की बात भी खुलकर नहीं कह पा रही। इस प्रकार अपेक्षा और उपेक्षा के खेल में फंसी यह पीढ़ी केवल और केवल सहानुभूति का पात्र बन अपना शेष जीवन बीता रही है। लेकिन साथ ही एक प्रश्न और निकलता है कि बलराज मधोक या नानाजी देशमुख के साथ जो व्यवहार हुआ था क्या यह उसका पुनरावर्तन नहीं है? शायद भाजपा की यही परम्परा हो।

भवानी निकेतन में पौधरोपण

विश्व वानिकी दिवस पर श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति जयपुर द्वारा समिति के पूर्व सचिव स्व. राजेन्द्रसिंह बगड़ की स्मृति में सघन पौधरोपण कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। समिति द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों, समिति के सदस्यों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में इस कार्यक्रम में सभी ने वर्ष 2017 में एक हजार पौधे लगाकर उनकी देखभाल कर जीवित रखने का संकल्प लिया। साथ ही 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भवानी निकेतन' के नारे के साथ पूरे परिसर को सदैव स्वच्छ रखने के लिए विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, पूर्व सांसद गोपालसिंह शेखावत, जालमसिंह आसपुरा, शिवपालसिंह नांगल, दिलीपसिंह छापोली आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सामाजिक व्यवस्था और धर्म में अन्तर

सामाजिक व्यवस्था	धर्म
1. सामाजिक व्यवस्था में खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएं इत्यादि आते हैं।	1. धर्म के अन्तर्गत केवल एक बात आती है- वह निर्धारित क्रिया जिसे करने से आत्म-साक्षात्कार होता है।
2. सामाजिक व्यवस्था देश, काल, पात्र और परिस्थिति के अनुरुप बदलती रहती है, विचार बदलते रहते हैं, सभ्यताएं बदलती रहती हैं।	2. धर्म अपरिवर्तनशील है, क्योंकि धर्म में विश्वभर का परमात्मा एक, परमात्मा को पाने की क्रिया एक और परिणाम में एक ही परमात्मा को सबको पाना है। इसलिए उसमें कभी कोई परिवर्तन हो नहीं सकता।
3. सामाजिक व्यवस्था समाज निर्धारित करता है।	3. धर्म का निर्धारण परमात्मा करते हैं। धर्मशास्त्र भगवान द्वारा बनाया जाता है।
4. एक रहन-सहन बदलकर कोई दूसरा रहन-सहन ग्रहण कर सकता है।	4. हर जन्म में मन को संयमित करने की साधना चलती रहती है। इस जन्म में जहां तक साधन हुआ है, अगले जन्म में उसके आगे की साधना होने लगती है। कोई चाहकर भी धर्म-परिवर्तन नहीं कर सकता।
5. जीवन को सुखमय बनाने के लिए वैज्ञानिक आविष्कारों और भौतिक उपकरणों का उपयोग होता है।	6. धर्म जन्म-जन्मान्तरों तक साथ देकर परमात्मा की प्राप्ति तक ले जाता है।
6. सामाजिक व्यवस्था मनुष्य को भौतिक सुख-सुविधायुक्त जीवन प्रदान करने तक ही सीमित है।	

श्री परमहंस आश्रम साहित्य से साभार।

पुस्तकालय भवन का शिलान्यास

झुंझुनूं जिला मुख्यालय पर स्थित शार्दुल राजपूत छात्रावास में 11 जुलाई को शार्दुल एज्युकेशन ट्रस्ट की ओर से पुस्तकालय भवन का शिलान्यास एवं प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया जिसमें मुख्य अतिथि पंजाब के राज्यपाल वी.पी. सिंह बदनोर ने कलम की ताकत को अपनाने की बात कही। उन्होंने इस पुस्तकालय को मॉडल पुस्तकालय बनाने एवं साथ ही कॅरियर काउंसलिंग केन्द्र बनाने की आवश्यकता जताई। पूर्व कुलपति लोकेश शेखावत ने झुंझुनूं की धरती को वीरों की धरती बताते हुए इतिहास से प्रेरणा लेने की बात कही। राज्य के पंचायती राजमंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ ने युवाओं की प्रतिभा को निखारने की बात कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष केशरीसिंह मंडावा ने की वहीं मेघराजसिंह रॉयल भी अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह में अजीतसिंह, कीर्तिसिंह, डॉ. प्रवीणसिंह, उपमन्युसिंह तंवर, देवेन्द्रसिंह सहित आईएएस व आरएएस में चयनित प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

शाखा के मैदान से

बूठ जेतमाल शाखा, बाड़मेर

स्थापना दिवस मनाया

आरक्षण को समाप्त कर समानता के आधार पर सरकारी व्यवहार की मांग करने के उद्देश्य से गठित समता आंदोलन समिति का स्थापना दिवस 1 जुलाई 2017 को एमसीडी सिविक सेंटर, मिंटो रोड़, नई दिल्ली में बड़े जोर-शोर से मनाया गया। इस समारोह में पूरे देश से समिति से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया। दिल्ली स्थित केन्द्रीय कार्यालयों, दिल्ली सरकार के कार्यालयों, सरकारी अस्पतालों के नर्सिंग स्टाफ, रेलवे, पीडब्ल्यूडी, मौसम विज्ञान विभाग आदि सभी कार्यालयों के कर्मचारियों ने इस समारोह में उपस्थित रहकर भागीदारी निभाई। समारोह में एम. नागराज, पाराशर नारायण शर्मा, योगेन्द्रसिंह मेघसर, समीरसिंह चंदेल सहित अनेक लोगों ने समिति के उद्देश्यों एवं गतिविधियों के बारे में विचार रखे। सभी ने इस आंदोलन को तेज करने की आवश्यकता जताई एवं अपने हक के लिए अंत तक लड़ने का संकल्प लिया।

मेलबोर्न में रक्तदान

राजपूत एसोसिएशन ऑफ मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) के सदस्यों ने महाराणा प्रताप की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। पृथ्वीराज सिंह गोहिल, रितुराजसिंह, गजुभा ने इस आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनेक युवकों एवं महिलाओं ने इस आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

IAS/RAS
VARDHAN IAS ACADEMY
वर्द्धन आई.ए.एस. अकेडमी
First Floor, Shri Ram Plaza, B-5, Nityanand Nagar, Gandhi Path, Vaishali Nagar-302 021
Mob. 8107456757, 9116824677

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय **अनिरुद्ध सिंह**
के प्रथम प्रयास में ही **आई.आई.टी. मुंबई** में चयनित होकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूर्ण कर **एक्सेस बैंक** की नीति निर्माण टीम में शामिल होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं
शुभेच्छु : श्री बजरंगसिंह तंवर **(पिता)**, श्रीमती तारा कंवर **(माता)**, भाग्यश्री कंवर **(बहिन)** एवं सम्पूर्ण तंवर परिवार बास बनेठी

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org